10+2
Economics (Theory)
(Hindi and English Versions)

Time allowed : 3 Hours Maximum Marks : 85

परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answers in their own words as far as possible.

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।

Marks allotted to each question are indicated against it.

विशेष निर्देश :

Special Instructions:-

(i) अपनी उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ के ऊपर बाई ओर दिए गए वृत में प्रश्न पत्र सीरीज अवश्य लिखें।

You must write question paper series in the circle at the top left side of the title page of your answer book.

(ii) प्रश्नों के उत्तर देते समय जो प्रश्न–संख्या प्रश्न–पत्र पर दर्शाई गई है, उत्तर पुस्तिका पर वही प्रश्न–संख्या लिखना अनिवार्य है।

While answering your questions, you must indicate on your answer book the same question no. as appears in your question paper.

(iii) उत्तर–पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना / पन्ने न छोड़ें।

Do not leave blank page/pages in your answer book.

(iv) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

All questions are compulsory.

(v) प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर एक ही स्थान पर दें।

All parts of each question should be attempted at one place.

भाग-क

PART-A

Q.1 (a) अर्थशास्त्र के जनक कौन हैं? (1X5=5)

Who is the father of Economics?

(b) क्या यह सही है?

औसत आगम $= \frac{\text{कुल आगम}}{\text{उत्पादन}}$

Is it correct that $AR = \frac{TR}{Q}$

Downloaded from cclchapter.com

(c) स्थानापन्न वस्तुएं क्या होती हैं?

What are substitute goods?

(d) मांग की लोच की श्रेणियां———————हैं।

(I) चार (ii) तीन (iii) पांच (iv) दो

Degrees of Price Elasticity of Demand---------.

(i) Four (ii) Three (iii) Five (iv) Two

(e) "Principles of Economics" नामक किताब ———————ने लिखी।

(i) Adam Smith एड़म स्मिथ (ii) Robbins रॉबिन्स

(iii) Dr. Marshall डा. मार्शल (iv) Peterson पीटरसन

Who wrote the book ' Principles of Economics'.

(i) Adam Smith (ii) Robbins (iii) Dr. Marshall (iv) Peterson

Q.2 मांग के नियम की मान्यताओं की व्याख्या कीजिए। (3)

Explain the assumptions of the law of demand.

Q.3 व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर लिखो। (3)

Write difference between Micro Economics and Macro Economics.

Q.4 पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं लिखो। (3)

Explain the features of the perfect competition market.

Q.5 साधन के प्रतिफल और पैमाने के प्रतिफल में अन्तर लिखो। (3)

Distinguish between returns to a factor and returns to scale.

Q.6 निम्न तालिका को पूरा कीजिए! (3)

उत्पादन की इकाइयां	औसत लगत	कुल लागत	सीमांत लागत
1	10	-	-
2	9	-	-
3	8	-	-
4	7	-	-
5	7	-	-

Complete the following table : (3)

Units of output	Average cost	Total cost	Marginal cost
1	10	-	-
2	9	-	-
3	8	-	-

Downloaded from cclchapter.com

4	7	-	-
5	7	-	-

Q.7 निम्न तालिका से मांग की लोच ज्ञात कीजिए (4)

कीमत प्रति इकाई (₹)	मांगी गई मात्रा (कि.ग्रा.)
10	15
9	20

Calculate the elasticity of demand from the following table. (4)

Per unit price (₹)	Quantity demanded (Kg)
10	15
9	20

Q.8 पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों की व्याख्या कीजिए? (4)

Explain the factors affecting supply.

Q.9 मांग में विस्तार तथा मांग में संकुचन की सचित्र व्याख्या कीजिए। (5)

Explain extension of demand and contraction of demand with the help of diagram.

Q.10 साधन के बढ़ते प्रतिफल क्या होते हैं? इनके लागू होने के क्या कारण हैं? (5)

What is meant by law of increasing returns to a factor? What are the causes of its implementation?

Q.11 मांग में होने वाले परिवर्तन का संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यदि पूर्ति स्थिर रहे। (5)

What will be the impact on equilibrium price when demand changes, but supply remains constant?

अथवा /or

(a) आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है? $\left(2\frac{1}{2}\right)$

How does an economic problem arise?

(b) उपयोगिता किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की होती है। $\left(2\frac{1}{2}\right)$

What is meant by utility? Name the various concepts of utility.

भाग-ख

PART-B

Q.12 (a) बेरोजगारी की समस्या अर्थशास्त्र की कौन सी शाखा से संबंधित है?

(i) समष्टि अर्थशास्त्र (ii) व्यष्टि अर्थशास्त्र

(iii) समष्टि एवं व्यष्टि अर्थशास्त्र (iv) इनमें से कोई नहीं।

Downloaded from cclchapter.com

Problem of unempolyment is related to---------.

(i) Macro Economics (ii) Micro Economics

(iii) Micro and Macro Economics (iv) None of these.

(b) भारत का केन्द्रिय बैंक----------है।

(i) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (ii) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

(iii) पंजाब नेशनल बैंक (iv) यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया

Name of Central Bank of India ------------

(i) State Bank of India (ii) Reserve Bank of India

(iii) Punjab National Bank (iv) Union Bank of India

(c) ---------- प्रत्यक्षकर का उदाहरण है।

(i) मनोरंजन कर (ii) उत्पादन कर

(iii) विक्री कर (iv) आय कर

Example of Direct Tax is ---------------.

(i) Entertainment Tax (ii) Excise Tax

(iii) Sales Tax (iv) Income Tax

(d) 'द जनरल थ्योरी ऑफ इंप्लॉयमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी' नामक पुस्तक किसने लिखी?

(i) डॉ. मार्शल (ii) जे.एम.केन्ज (iii) रॉन्विस (iv) हेन्सन

Who wrote the book 'The General Theory of Employment, Interest and Money.

(i) Dr. Marshall (ii) J.M. Keynes (iii) Robbins (iv) Hanson.

(e) राष्ट्रीय आय को मापने की कितनी विधियां हैं?

(i) दो (ii) चार (iii) तीन (iv) पांच

How many methods to measure the national income.

(i) Two (ii) Four (iii) Three (iv) Five (5)

Q.13 स्टॉक तथा प्रवाह में क्या अंतर है? (2)

Distinguish between Stock and Flow?

Q.14 यदि MPS का मूल्य 0.8 है तो गुणक का मूल्य ज्ञात कीजिए। (3)

If MPS= 0.8, find the value of multiplier.

Q.15 मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुओं में अंतर स्पष्ट करें। (3)

Differentiate between intermediate goods and final goods.

Q.16 निम्नलिखित आंकड़ों से शुद्ध राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए। (3)

Calculate the Net National Income from the following data

Downloaded from cclchapter.com

	मदें (Items)	करोड़ (₹) Crore (₹)
(i)	सकल घरेलू आय (Gross Domestic Income)	45,000
(ii)	मूल्यह्रास (Depreciation)	3000
(iii)	मध्यवर्ती वस्तु तथा कच्चा माल (Intermediate Goods and raw material)	5000
(iv)	विदेशों से शुद्ध साधन आय (Net Factor Income from Abroad)	2000

17 घाटे के बजट की धारणा की व्याख्या कीजिए। (3)

Explain the concept of Deficit budget.

18 दोहरी गणना की समस्या की व्याख्या करें। इस समस्या से कैसे बचा जा सकता है? (4)

Explain the double counting problem. How it can be avoided?

19 मुद्रा के मुख्य कार्यों का वर्णन कीजिए। (4)

Explain the main function of money.

20 केन्द्रिय बैंक तथा व्यापारिक बैंक में क्या अंतर है? (5)

What is difference between Central Bank and Commercial Bank.

21 प्रतिकूल भुगतान शेष को ठीक करने के उपायों का वर्णन कीजिए। (5)

Explain the measures to correct the disequilibrium in the balance of payments.

22 वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? इसकी मुख्य कठिनाईयों का वर्णन कीजिए। (5)

What is barter system of exchange? Explain its drawbacks.

अथवा /or

(i) एच्छिक बेरोजगारी तथा अनैच्छिक बेरोजगारी में क्या अंतर है। $\left(2\frac{1}{2}\right)$

Differentiate between voluntary and involuntary unemployment

(ii) बैंक दर पर टिप्पणी लिखो।

Write a note on bank rate $\left(2\frac{1}{2}\right)$

Downloaded from cclchapter.com

अर्थशास्त्र

भाग(क)

Q.1(a) **अर्थशास्त्र के जनक कौन हैं?**

(क) उत्तर : एडम स्मिथ।

(b) **क्या यह सही है?**

(ख) उत्तर : हाँ।

(c) **स्थानापन्न वस्तुएं क्या होती हैं?**

(ग) उत्तर : स्थानापन्न वस्तुएं वे संबंधति वस्तुएँ हैं जो एक–दूसरे के लिए प्रयोग की जाती हैं। उदाहरण के लिए पेप्सी कोला और कोका कोला।

(d) **मांग की लोच की श्रेणियां------- हैं?**

(घ) उत्तर : मांग की लोच की श्रेणियां पांच हैं।

(b) **"Principles of Economics" नामक किताब ------लिखी है?**

(ङ) उत्तर : यह पुस्तक 'डॉ. मार्शल' ने लिखी है।

Q.2 **मांग के नियम की मान्यताओं की व्याख्या कीजिए?**

उत्तर : (1) उपभोक्ताओं की रूचियों व प्राथमिकताओं में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(2) उपभोक्ताओं की आय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(3) संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(4) उपभोक्ता वस्तु की कीमत के निकट भविष्य में और अधिक परिवर्तन की संभावना नहीं करता।

Q.3 **व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर लिखो?**

उत्तर :

	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
(1)	व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है, जैसे एक उपभोक्ता, एक फर्म, एक परिवार की आर्थिक समस्याएं।	(1) समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है।
(2)	व्यष्टि अर्थशास्त्र एक व्यक्तिगत फर्म अथवा उद्योग में उत्पादन तथा कीमत के निर्धारण से संबंधित है।	(2) समष्टि अर्थशास्त्र का संबंध सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन तथा सामान्य कीमत स्तर के निर्धारण से है।
(3)	व्यष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की यह धारणा है कि समष्टि चर स्थिर रहते हैं।	(3) समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन की यह धारणा है कि व्यष्टिचर स्थिर रहते हैं।
(4)	व्यष्टि अर्थशास्त्र की समस्याओं के संदर्भ में बाजार प्रणाली की भूमिका का बहुत महत्व होता है।	(4) समष्टि अर्थशास्त्र की समस्याओं के संदर्भ में सरकार की भूमिका का बहुत महत्व होता है।

Downloaded from cclchapter.com

Q.4 **पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएं लिखो।**

उत्तर : पूर्ण प्रतियोगिता की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

(1) फर्मों या विक्रेताओं की अधिक संख्या : किसी वस्तु को बेचने वाले विक्रेताओं की संख्या इतनी अधिक होती है कि किसी एक फर्म द्वारा पूर्ति में की जाने वाली वृद्धि या कमी का बाजार की कुल पूर्ति पर बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है। अतः कोई अकेली फर्म वस्तु की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती। उसे बाजार में प्रचलित कीमत पर अपना उत्पादन बेचना पड़ता है।

(2) क्रेताओं की अधिक संख्या : क्रेताओं की संख्या भी अधिक होती है। इसलिए कोई एक क्रेता भी विक्रेता की तरह वस्तु की कीमत को प्रभावित करने के योग्य नहीं होता। उसकी मांग में होने वाली वृद्धि या कमी का बाजार मांग पर बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है।

(3) एक समान वस्तुएं : पूर्ण प्रतियोगिता की एक शर्त यह है कि सभी विक्रेता एक सी ही इकाईयां बेचते हैं। उनमें रूप, रंग, गुण या किस्म में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं होता।

(4) पूर्ण ज्ञान : क्रेता और विक्रेताओं को कीमत की पूरी–2 जानकारी होती है, क्रेताओं को इस बात का पूर्ण ज्ञान होता है कि भिन्न–2 विक्रेता वस्तु को किस कीमत पर बेच रहे हैं।

(5) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश व छोड़ना : पूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में किसी उद्योग में कोई भी फर्म प्रवेश कर सकती है अथवा पुरानी फर्म उस उद्योग को छोड़ सकती है।

(6) स्वतंत्र निर्णय : क्रेताओं और विक्रेताओं में किसी वस्तु के उत्पादन, उसकी मात्रा और कीमत संबंधी कोई समझौता नहीं होता। प्रत्येक फर्म अपने निर्णय स्वयं लेती है।

Q.5 **साधन के प्रतिफल और पैमाने के प्रतिफल में अंतर लिखो।**

उत्तर : साधन के प्रतिफल और पैमाने के प्रतिफल में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं–

(1) साधन के प्रतिफल की यह मान्यता है कि साधनों का अनुपात परिवर्तनशील होता है। इसके विपरीत पैमाने के प्रतिफल की यह मान्यता है कि साधनों का अनुपात स्थिर रहता है।

(2) साधन के प्रतिफल उस समय लागू होते हैं जब केवल एक साधन परिवर्तनशील होता है तथा बाकी साधन स्थिर रहते हैं। इसके विपरीत पैमाने का प्रतिफल उस समय लागू होता है जब उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं।

(3) साधन के प्रतिफल इस मान्यता पर आधारित हैं कि उत्पादन के पैमाने में परिवर्तन नहीं होता। इसके विपरीत पैमाने के प्रतिफल इस मान्यता पर आधारित हैं कि उत्पादन के पैमाने में परिवर्तन होता है।

(4) पैमाने के प्रतिफल का अध्ययन इस मान्यता पर आधारित है कि साधन अनुपात स्थिर रहता है। इसके विपरीत साधन प्रतिफल इस मान्यता पर आधारित है कि साधन अनुपात में परिवर्तन होता है।

(5) पैमाने का प्रतिफल केवल दीर्घकालीन संभावना है जबकि साधन के प्रतिफल का अध्ययन सामान्यता अल्पकाल के संदर्भ में किया जाता है।

Downloaded from cclchapter.com

Q.6 निम्न तालिका को पूरा कीजिए।

उत्तर :

उत्पादन की इकाइयां	औसत लागत	कुल लागत	सीमांत लागत
1	10	10	10
2	9	18	8
3	8	24	6
4	7	28	4
5	7	35	7

Q.7 निम्न तालिका से मांगकी लोच ज्ञात कीजिए।

उत्तर :

$$P = 10$$
$$P_1 = P$$
$$\Delta P = P_1 = 9 - 10 = -1$$
$$Q = 15, Q_1 = 20$$
$$\Delta Q = Q_1 - Q = 20 - 15 = 5$$

$$Ed = (-)\frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P} = (+1)\frac{10}{15} \times \frac{5}{+1} = \frac{10}{3}$$
$$Ed = 3.3$$

मांग की लोच इकाई से अधिक है।

Q.8 पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व :

(1) वस्तु की कीमत : किसी वस्तु की पूर्ति तथा कीमत में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। किसी वस्तु की कीमत बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है तथा कीमत कम होने से पूर्ति कम होती है।

(2) संबंधित वस्तुओं की कीमत : किसी वस्तु की पूर्ति संबंधित वस्तुओं की कीमत पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए एक फर्म चाय बेचती है। यदि बाजार में कॉफी की कीमत बढ़ जाती है, तब फर्म वर्तमान कीमत पर चाय की कम मात्रा बेचने के लिए तैयार होगी अथवा ऊंची कीमत पर वह चाय की समान मात्रा बेचने के लिए तैयार होगी।

(3) फर्मों की संख्या : किसी वस्तु की बाजार पूर्ति फर्मों की संख्या पर भी निर्भर करती है। फर्मों की संख्या अधिक होने पर पूर्ति अधिक होती है। इसके विपरीत फर्मों की संख्या कम होने पर पूर्ति कम हो जाती है।

(4) फर्म के उद्देश्य: यदि फर्म का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है तो केवल अधिक कीमत पर ही

Downloaded from cclchapter.com

अधिक पूर्ति की जाएगी। इसके विपरीत यदि फर्म का उद्देश्य बिक्री या उत्पादन या रोजगार को अधिकतम करना है तो वर्तमान कीमत पर भी अधिक पूर्ति की जाएगी।

(5) तकनीक में परिवर्तन : उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन होने का भी पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। उत्पादन तकनीक में सुधार होने के फलस्वरूप प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी होती है। तथा लाभ में वृद्धि होती है। इसके फलस्वरूप पूर्ति में वृद्धि होती है।

(6) भविष्य में संभावित कीमत : भविष्य में वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन की संभावित का पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। यदि भविष्य में वस्तु की कीमत बढ़ने की संभावना हो तो वर्तमान पूर्ति घट जाती है। इसके विपरीत यदि भविष्य में कीमत घटने की संभावना हो तो वर्तमान में पूर्ति बढ़ जाती है।

(7) सरकारी नीति : सरकार की कर तथा अनुदान संबंधी नीतियों का वस्तु की बाजार पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि होने के फलस्वरूप सामान्यतः पूर्ति कम होती है। इसके विपरीत अनुदानों के कारण पूर्ति में वृद्धि होती है।

Q.9 मांग में विस्तार तथा मांग में संकुचन की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर : मांग का विस्तार : अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होने के फलस्वरूप उसकी मांग अधिक हो जाती है तो इसे मांग का विस्तार कहा जाता है। जब आइसक्रीम की कीमत ₹ 5 है तब इसकी मांगी गई मात्रा 1 आइसक्रीम है। जब कीमत घटकर ₹ 1 हो जाती है तो मांग का विस्तार होकर नयी मांग 5 आइसक्रीम हो जाती है।

मांग का विस्तार

कीमत ₹	मांग की मात्रा
5	1
1	5

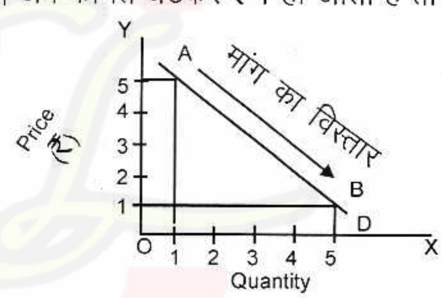

चित्र में समान मांग वक्र के ऊँचे बिन्दु A से नीचे बिन्दु B की ओर सरकना मांग के विस्तार को प्रकट करता है।

मांग का संकुचन : अन्य बातें समान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने को फलस्वरूप उसकी मांग कम हो जाती है तो मांग में होने वाली कमी को मांग का संकुचन कहते हैं। जैसा कि तालिका तथा चित्र से ज्ञात होता है कि जब आइसक्रीम की कीमत ₹ 1 है कि तो 5 आइसक्रीम की मांग की जाती है। यदि आइसक्रीम की कीमत बढ़कर ₹ 5 हो जाती है तो आइसक्रीम की मांग का सकुंचन होकर नयी मांग 1 आइसक्रीम की हो जाती है।

मांग का संकुचन

कीमत (₹)	मांग की मात्रा
1	5
5	1

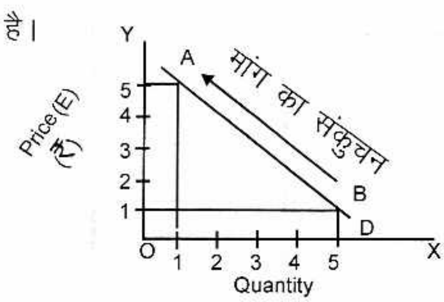

Downloaded from cclchapter.com

मांग के विस्तार के समान ही मांग के संकुचन को भी एक ही मांग वक्र पर संचालन द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। यद्यपि यहाँ संचलन की दिशा विपरीत है। विस्तार की स्थिति में संचलन नीचे की ओर होता है जबकि संकुचन की स्थिति में यह संचलन ऊपर की ओर होता है।

Q.10 साधन के बढ़ते प्रतिफल क्या होते हैं? इनके लागू होने के क्या कारण हैं?

उत्तर : साधन के बढ़ते प्रतिफल वह स्थिति है जिसमें कुल उत्पाद उस समय बढ़ती दर पर बढ़ता है जब स्थिर साधन की निश्चित इकाई के साथ परिवर्तनशील साधनों की अधिक इकाईयों का प्रयोग किया जाता है। इस स्थिति में परिवर्तनशील साधन का सीमांत उत्पाद बढ़ता जाता है। अन्य शब्दों में, उत्पादन की सीमांत लागत कम होती जाती है।

बेन्हम के शब्दों में "जब साधनों के प्रयोग में एक साधन के अनुपात को बढ़ाया जाता है तब एक सीमा तक उस साधन की सीमांत उत्पादकता में वृद्धि होगी।"

साधन के बढ़ते प्रतिफल को तालिका तथा चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

श्रम की इकाईयां	भूमि की इकाईयां हैक्टेयर	कुल उत्पाद	सीमान्त उत्पाद
1	1	4	4
2	1	10	10–4=6
3	1	18	18–10=8
4	1	28	28–18=10
5	1	40	40–28=12

तालिका से ज्ञात होता है कि जब भूमि की स्थिर मात्रा के साथ श्रम की अधिक इकाईयों का प्रयोग किया जा रहा है तो कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर पर बढ़ रहा है। परिवर्तनशील साधन का सीमांत उत्पाद भी बढ़ रहा है।

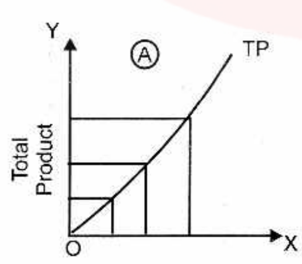

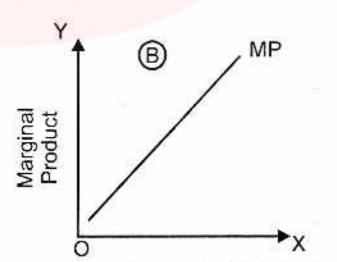

चित्र A से ज्ञात होता है कि कुल उत्पाद बढ़ती हुई दर पर बढ़ रहा है जबकि चित्र B से ज्ञात होता है कि परिवर्तनशील साधन सीमांत उत्पाद बढ़ता जा रहा है।

साधन के बढ़ते प्रतिफल के कारणः साधन के बढ़ते प्रतिफल के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:–

(1) <u>स्थिर साधन का पूर्ण प्रयोग :</u> उत्पादन की प्रारंभिक अवस्था में उत्पादन के स्थिर साधन जैसे मशीन

Downloaded from cclchapter.com

का अल्प प्रयोग होता है। उसके पूर्ण प्रयोग के लिए परिवर्तनशील साधन जैस श्रम की अधिक इकाइयों की आवश्यकता होती है। इसलिए आरंभिक अवस्था में परिवर्तनशील साधन की अतिरिक्त इकाइयों का प्रयोग करने के फलस्वरूप कुल उत्पादन में वृद्धि होती है, अन्य शब्दों में परिवर्तनशील साधन का सीमांत उत्पादन बढ़ने लगता है।

(2) परिवर्तनशील साधन की कुशलता में वृद्धि : परिवर्तनशील साधन जैसे श्रम की अतिरिक्त इकाइयोंका प्रयोग करने से प्रक्रिया आधारित श्रम विभाजन संभव हो जाता है। इसके फलस्वरूप उस साधन की कुशलता में वृद्धि होती है तथा सीमांत उत्पादकता बढ़ जाती है।

(3) साधनों में उचित समन्वयः जब तक उत्पादन के स्थिर साधन का अल्प प्रयोग होता है, परिवर्तनशील साधन की अतिरिक्त इकाइयों का प्रयोग करने से स्थिर तथा परिवर्तनशील साधनों की समन्वयता में वृद्धि होती है। इसके फलस्वरूप कुल उत्पादन में बढ़ती हुई दर से वृद्धि होती है।

Q.11 मांग में होने वाले परिवर्तन का संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यदि पूर्ति स्थिर रहे।

उत्तर यदि वस्तु की पूर्ति स्थिर रहती है तो मांग के बढ़ने से कीमत बढ़ेगी तथा मांग के कम होने से कीमत कम होगी। इसे निम्न चित्र द्वारा दिखाया गया है।

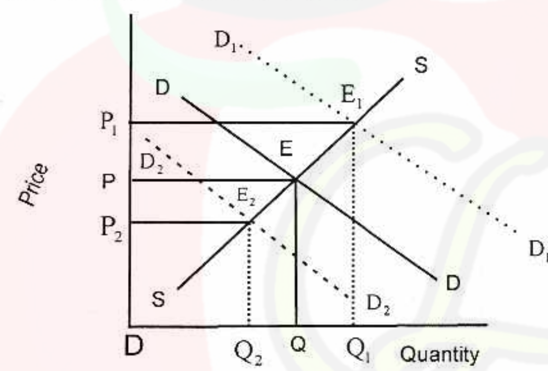

चित्र में DD प्रारंभिक मांग वक्र है तथा SS प्रारंभिक पूर्ति वक्र है। OP संतुलन कीमत है तथा OQ संतुलन मांग तथा पूर्ति है।

मान लीजिए यदि मांग में वृद्धि होने के कारण मांग वक्र दाईं ओर खिसक कर D_1D_1 हो जाता है। नया मांग वक्र D_1D_1 पूर्ति वक्र SS को E_1 बिन्दु पर काट रहा है। अतः E_1 नया संतुलन बिन्दु होगा तथा OQ_1 नई संतुलन मात्रा और OP_1 नई संतुलन कीमत होगी। इसके विपरीत मांग में पूर्ति की तुलना में कमी होने के कारण मांग वक्र वाईं ओर खिसक कर कर D_2D_2 हो जाएगा। नये मांग वक्र D_2D_2 पूर्ति वक्र SS को E_2 बिन्दु पर काट रहा है। अतः E_2 नया संतुलन बिन्दु होगा। इस बिन्दु पर OP_2 नई संतुलन कीमत होगी तथा OQ_2 नई संतुलन मात्रा होगी।

संक्षेप में हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पूर्ति के स्थिर रहने पर जब किसी वस्तु की मांग में वृद्धि होती है तो संतुलन कीमत ऊंची हो जाती है तथा संतुलन उत्पादन भी बढ़ जाता है। इसके विपरीत जब मांग में कमी होती है तो संतुलन कीमत कम हो जाती है तथा संतुलन उत्पादन भी कम हो जाता है। चित्र द्वारा यह स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

Downloaded from cclchapter.com

(1) <u>मांग में वृद्धिः</u>

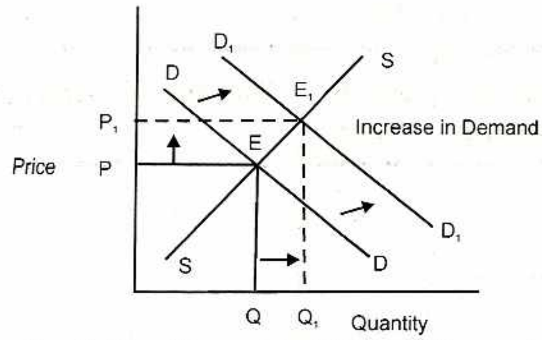

चित्र से ज्ञात होता है कि पूर्ति वक्र SS के स्थिर रहने पर मांग के बढ़ने के कारण DD मांग वक्र ऊपर दाईं ओर खिसक कर D_1D_1 हो गया है। यह पूर्ति वक्र SS को E_1 बिन्दु पर काट रहा है। इसलिए E_1 नया संतुलन बिन्दु होगा। इससे ज्ञात होता है कि नई संतुलन कीमत बढ़कर OP_1 हो जाएगी तथा संतुलन मात्रा बढ़ कर OQ_1 हो जाएगी।

<u>मांग में कमी</u>

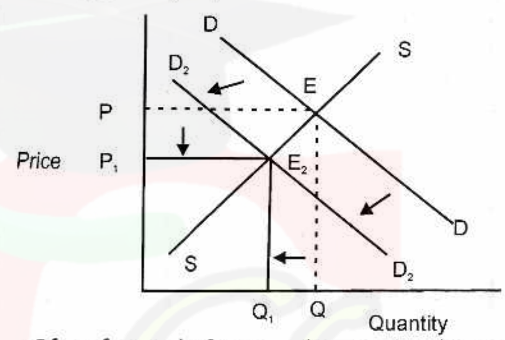

चित्र से ज्ञात होता है कि पूर्ति वर्क SS के स्थिर रहने पर मांग के कम होने के कारण मांग वक्र DD नीचे बाईं ओर खिसक कर D_2D_2 हो गया है। यह पूर्ति वक्र SS को E_2 बिन्दु पर काट रहा है। इसलिए बिन्दु E_2 नया संतुलन बिन्दु होगा। इस बिन्दु पर संतुलन कीमत कम होकर OP_2 हो जायेगी तथा संतुलन मात्रा कम होकर OQ_1 हो जायेगी।

Or

(i) आर्थिक समस्या के उत्पन्न होने के तीन कारण हैं :

(1) <u>असीमित आवश्यकताएं</u> : मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती हैं। कोई भी मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर सकता। किसी समाज के सभी सदस्यों की अवश्यकताओं को किसी निश्चित समय में पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं किया जा सकता। वास्तविकता यह है कि मनुष्य की आवश्यकताएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

(2) <u>सीमित या दुर्लभ साधन :</u> आवश्यकताओं को संतुष्ट करने वाली अधिकतर वस्तुएं तथा सेवाएं सीमित या दुर्लभ होती हैं। इन वस्तुओं को दुर्लभ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनकी मांग इनकी पूर्ति से अधिक होती है। अर्थात D > S

(3) <u>वैकल्पिक प्रयोग :</u> प्रत्येक साधन या वस्तु के वैकल्पिक प्रयोग होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति या समाज को यह चुनाव करना पड़ता है कि वह अपने सीमित साधनों का उपयोग कौन सी आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए करे। उदाहरण के लिए दूध एक सीमित वस्तु है। इसका विभिन्न कार्यों जैसे पनीर, आइसक्रीम बनाने में प्रयोग किया जा सकता है। इन सीमित वस्तुओं को आर्थिक वस्तु या धन भी

Downloaded from cclchapter.com

कहा जाता है।

वास्तव में चुनाव की समस्या ही अर्थशास्त्र की मुख्य समस्या है। इसे ही आर्थिक समस्या कहा जाता है।

(ii) उपयोगिता : किसी वस्तु की वह शक्ति जिसके द्वारा आवश्यकता की संतुष्टि होती है, उपयोगिता कहलाती है।

हिब्ड़न के अनुसार उपयोगिता किसी पदार्थ की वह क्षमता है जो आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है।

लिप्सी के अनुसार, उपयोगिता वह संतुष्टि है जिसे कोई व्यक्ति उपयोग के फलस्वरूप प्राप्त करता है।

उपयोगिता दो प्रकार की होती है।

(1) कुल उपयोगिता

(2) सीमान्त उपयोगिता

(1) कुल उपयोगिता : एक वस्तु की विभिन्न इकाइयों के उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता के जोड़ को कुल उपयोगिता कहा जाता है।

(2) सीमांत उपयोगिता: किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपयोग करने से कुल उपयोगिता में होने वाली वृद्धि को सीमांत उपयोगिता कहते हैं।

भाग-ख

Q.13 (a) **बेरोजगारी की समस्या अर्थशास्त्र की कौन सी शाखा से संबंधित है?**

उत्तर : समष्टि अर्थशास्त्र।

(b) **भारत का केन्द्रीय बैंक -----है।**

उत्तर : रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया

(c) **------प्रत्यक्षकर का उदाहरण है।**

उत्तर : आय कर।

(d) **'द जनरल थ्योरी ऑफ इंप्लॉयमेंट, इंटरनेट एंड मनी' नामक पुस्तक किसने लिखी?**

उत्तर : जे.एम.केन्ज।

(e) **राष्ट्रीय आय को मापने की कितनी विधियां हैं?**

उत्तर : तीन।

Q.13 **स्टॉक तथा प्रभाव में क्या अंतर है?**

उत्तर :

	स्टॉक	प्रवाह
(1)	स्टॉक का संबंध समय एक बिन्दु से होता है	(1) प्रवाह का संबंध समय अवधि से होता है।
(2)	स्टॉक का समयकाल नहीं होता	(2) प्रवाह का समयकाल होता है।
(3)	स्टॉक, प्रवाह को प्रभावित करता है।	(3) प्रवाह, स्टॉक को प्रभावित करता है।
(4)	अर्थशास्त्र की कुछ अवधारणाओं का कोई स्टॉक पहलू नहीं होता।	(4) आयात–निर्यात को केवल प्रवाह अवधारणाओं के रूप में प्रयोग किया जाता है।

Downloaded from cclchapter.com

Q.14 यदि MPS का मूल्य 0-8 है तो गुणक का मूल्य ज्ञात कीजिए।

उत्तर :

$$K = \frac{1}{MPS}$$

$$= \frac{1}{0.8} = \frac{1}{\frac{8}{10}} = \frac{1\times10}{8} = \frac{10}{8} = \frac{5}{4} = 1.25 = K = 1.25$$

Q.15 मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुओं में अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर

	अंतिम वस्तुएं	मध्यवर्ती वस्तुएं
(1)	ये वस्तुएं उत्पादन परिसीमा के बाहर होती हैं। इन वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि नहीं की जानी है।	(1) ये वस्तुएं उत्पादन परिसीमा के अंदर होती हैं इनके मूल्य में वृद्धि अभी होनी है।
(2)	ये वस्तुएं अंतिम उपभोक्ता के पास उपभोग या निवेश के लिए जाने को तैयार होती है।	(2) ये वस्तुएं उत्पादकों द्वारा या तो कच्चे माल के रूप में या पुनः बिक्री के लिए प्रयोग में लायी जाती हैं।
(3)	अंतिम वस्तुओं का या तो उपभोग या निवेश किया जाता है।	(3) मध्यवर्ती वस्तुओं का उत्पादकों द्वारा मध्यवर्ती उपभोग किया जाता है।
(4)	राष्ट्रीय आय की गणना में इन वस्तुओ को शामिल किया जाता है।	(4) राष्ट्रीय आय की गणना में इन वस्तुओं को शामिल नहीं किया जाता है।

Q.16 निम्नलिखित आंकड़ों से शुद्ध राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए।

16 उत्तर शुद्ध राष्ट्रीय आय = सकल घरेलू आय—मूल्यह्रास+विदेशों से शुद्ध साधन आय

= 45,000—3,000+2000

= ₹ 44,000 करोड़

Q.17 घाटे के बजट की धारणा की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : घाटे का बजट : घाटे का बजट वह बजट है जिसमें किसी सरकार की अनुमानित आय उसके अनुमानित व्यय से कम होती है।

घाटे का बजट = सरकार की अनुमानित आय < सरकार का अनुमानित व्यय।

घाटे के बजट के लाभ तथा हानियाँ

लाभः केन्ज ने मंदी की स्थिति को ठीक करने के लिए घाटे के बजट को महत्वपूर्ण बताया है। इसके अनुसार मंदी की स्थिति में AD का स्तर नीचा होने के कारण निवेश का स्तर बहुत नीचा हो जाता है। फलस्वरूप नियोजित उत्पादन का स्तर पूर्ण रोजगार स्तर पर होने वाले उत्पादन से बहुत नीचा हो जाता है। बेरोजगारी एक राष्ट्रीय समस्य बन जाती है। घाटे का बजट दो तरह से AD के स्तर को ऊपर उठाता है : (1) प्रत्यक्ष रूप से सरकार को अधिक व्यय प्रेरित करके। (2) अप्रत्यक्ष तौर पर लोगों को अधिक व्यय के लिए प्रेरित करके।

हानियाँ : मुद्रा स्फीति की अवधि में घाटे का बजट वांछनीय नहीं है। इस अवधि में कुल मांग (AD)

Downloaded from cclchapter.com

पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक कुल पूर्ति के स्तर से अधिक होती है। ऐसी स्थिति में घाटे का बजट कुल मांग तथा कुल पूर्ति के बीच के अंतर को और अधिक बढ़ा देगा। फलस्वरूप स्फीति अंतराल बढ़ेगा तथा मजदूरी दर कीमत स्तर में अधिक से अधिक वृद्धि होने लगेगी।

Q.18 दोहरी गणना की समस्या की व्याख्या करें। इस समस्या से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर दोहरी गणना से अभिप्राय किसी वस्तु के मूल्य की गणना एक से अधिक बार करने से है। इसका कारण यह है कि यद्यपि उत्पाद विधि द्वारा राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए केवल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को जोड़ा जाता है। परंतु प्रत्येक उद्यम की दृष्टि से उसके द्वारा की गई बिक्री अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री है। उदाहरण के लिए एक किसान 1 क्वि. गेहूँ का उत्पादन करता है तथा उसे एक आटा मिल को बेचता है। जहाँ तक किसान का संबंध है उसके लिए गेहूँ की बिक्री अंतिम वस्तु की बिक्री है। मान लीजिए किसान गेहूँ बेच कर ₹ 400 प्राप्त करता है तथा उसका गेहूँ के उत्पादन पर कोई खर्च नहीं होता। इस प्रकार किसान ने ₹ 400 के मूल्य का योगदान किया है। लेकिन आटा मिल के लिए गेंहू मध्यवर्ती है। वह गेहूँ को मैदा में परिवर्तित करता है तथा उसे बेकरी वाले को ₹ 600 में बेच देता है। आटा मिल मैदा को अंतिम उत्पाद मानेगा। लेकिन बेकरी वाला उसे मध्यवर्ती वस्तु मानेगा तथा उसका प्रयोग डबलरोटी बनाने के लिए करेगा। बेकरी वाला डबलरोटी दुकानदार को ₹ 800 में बेचता है। बेकरी वाले के लिए डबलरोटी अंतिम वस्तु है लेकिन दुकानदार के लिए यह मध्यवर्ती वस्तु है। मान लीजिए दुकानदार डबलरोटियों को अंतिम उपभोक्ता को ₹ 900 में बेच देता है। जहां तक किसान, आटा मिल, बेकरी वाले तथा दुकानदार का प्रश्न है उनके उत्पादन का मूल्य ₹ 400+ ₹ 600+ ₹ 900= ₹ 2700 होगा। प्रत्येक उत्पादक जो वस्तु बेचता है वह उसे अंतिम वस्तु मानता है। उसकी इस मान्यता पर गलती भी नहीं है क्योंकि उसका इससे कोई संबध नहीं है कि वह जो वस्तु बेचता है उसके बेचने के बाद वह किस प्रकार प्रयोग की जाती है। लेकिन हम जानते हैं कि मैदा के मूल्य में गेहूँ का मूल्य शामिल है तथा डबलरोटी के मूल्य में, गेहूँ और आटा मिल की सेवाओ का मूल्य शामिल है। अंत में दुकानदार द्वारा बेची गई डबलरोटी के मूल्य में, गेहूँ का मूल्य, आटा मिल और बेकरी वाले की सेवाओं का मूल्य शामिल है। इस प्रकार गेहूँ के मूल्य की चार बार गणना होती है। आटा मिल की सेवाओं की तीन बार तथा बेकरी वाले की सेवाओं की गणना दो बार होती है। एक वस्तु के मूल्य की गणना जब एक बार से अधिक होती है तो इसे दोहरी गणना कहते हैं। इसके फलस्वरूप राष्ट्रीय उत्पाद में अनावश्यक रूप से वृद्धि हो जाती है।

<u>दोहरी गणना की समस्या से कैसे बचा जाए?</u>

दोहरी गणना की गलती से बचने के दो उपाय हैं। (1) अंतिम उत्पाद विधि (2) मूल्य वृद्धि विधि।

(1) <u>अंतिम उत्पाद विधि</u> : इस विधि के अनुसार दोहरी गणना की गलती से बचने के लिए उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को घटा दिया जाता है। अन्य शब्दों में केवल अंतिम वस्तुओं के मूल्य को शामिल किया जाता है।

Downloaded from cclchapter.com

अन्तिम उत्पाद का मूल्य = उत्पाद मूल्य–मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य

(2) मूल्य वृद्धि विधि: मूल्य वृद्धि विधि से अभिप्राय है कि उत्पादन की प्रत्येक अवस्था में प्रत्येक फर्म द्वारा वस्तु के मूल्य में कितना मूल्य जोड़ा गया है। मूल्य वृद्धि की गणना करने के लिए किसी उत्पादन के मूल्य में से उसकी लागत को घटा दिया जाता है। किसी देश की घरेलु सीमा में सभी उद्यमियों द्वारा की गई मूल्य वृद्धि को जोड़ कर घरेलू उत्पाद ज्ञात किया जा सकता है।

Q.19 मुद्रा के मुख्य कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मुद्रा के मुख्य कार्य:

(1) विनिमय का माध्यम : मुद्रा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य विनिमय का माध्यम है। इसका अभिप्राय यह है कि मुद्रा के रूप में एक व्यक्ति अपनी वस्तुओं को बेचता है तथा दूसरी वस्तुओं को खरीदता है। मुद्रा क्रय तथा विक्रय दोनों में ही एक मध्यस्थ का कार्य करती है। विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा ने वस्तु विनिमय की मुख्य कठिनाई को समाप्त कर दिया है। मौद्रिक प्रणाली के अंतर्गत वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय को दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में वस्तुओं को बेच कर मुद्रा प्राप्त की जा सकती है दूसरे भाग में इस मुद्रा की सहायता से अन्य वस्तुओं को खरीदा जाता है। इसके फलस्वरूप विनिमय का कार्य सरल और सुगम हो गया है तथा समय और परिश्रम की बहुत अधिक बचत हुई है।

(2) मूल्य का मापदंड या मूल्य की इकाई : मुद्रा का दूसरा कार्य वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य को मापना है। मुद्रा लेखे की इकाई के रूप में मूल्य का माप करती है। लेखे की इकाई से अभिप्राय यह है कि प्रत्येक वस्तु या सेवा का मूल्य मुद्रा के रूप में मापा जाता है। वस्तु विनिमय की एक मुख्य कठिनाई मूल्य मापने का अभाव था। मुद्रा के द्वारा इस कठिनाई को दूर किया जा सकता है। प्रत्येक वस्तु और सेवा की कीमत मुद्रा के रूप में व्यक्त की जा सकती है। जब हम यह कहते हैं कि एक किलो चीनी की कीमत ₹ 40 है तो यह चीनी का मुद्रा में व्यक्त किया गया मूल्य है।

Q.20 केन्द्रिय बैंक तथा व्यापारिक बैंक में क्या अंतर है?

उत्तर केन्दिय्र बैंक तथा व्यापारिक बैंक में अंतर

(1) केन्द्रिय बैंक का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा होता है जबकि व्यापारिक बैंकों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है।

(2) केन्द्रिय बैंक का जनता के साथ सीधा लेन–देन नहीं होता है जबकि व्यापारिक बैंकों का जनता के साथ सीधा लेन–देन होता है।

(3) केन्द्रिय बैंक एक सरकारी संस्था है जबकि व्यापारिक बैंकों का स्वामित्व गैर सरकारी तथा सरकारी भी हो सकता है।

(4) केन्द्रिय बैंक व्यापारिक बैंकों से प्रतियोगिता नहीं करता बल्कि वह बैंकों का बैंक व अंतिम ऋणदाता का काम करता है।

(5) केन्द्रिय बैंक को नोट जारी करने का पूर्ण एकाधिकार होता है जबकि व्यापारिक बैंक नोट जारी नहीं

Downloaded from cclchapter.com

कर सकते।

(6) केन्द्रिय बैंक देश की बैंकिंग प्रणाली का नियंत्रण करता है। व्यापारिक बैंक केन्द्रिय बैंक के नियंत्रण में कार्य करते हैं।

(7) केन्द्रिय बैंक देश के विदेशी विनिमय का संरक्षण होता है। व्यापारिक बैंक विदेशी विनिमय संबंधी कार्यों के लिए केन्द्रिय बैंक की स्वीकृति पर निर्भर करते हैं।

(8) केन्द्रिय बैंक देश की सरकार का बैंक है। व्यापारिक बैंक सरकार के कार्यों के लिए केन्द्रिय बैंक के प्रतिनिधि के रूप में काम कर सकते हैं।

(9) केन्द्रिय बैंक अन्य व्यापारिक बैंकों का बैंक होता है। व्यापारिक बैंकों को अपनी कुल जमा का कुछ प्रतिशत केन्द्रिय बैंक के पास नकदकोष के रूप में रखना पड़ता है।

(10) केन्द्रिय बैंक साख नियंत्रण करता है तथा बैंकों के समाशोधन गृह का काम करता है। अन्य बैंक ये काम केन्द्रिय बैंक के प्रतिनिधि के रूप में कर सकते हैं।

Q.21 प्रतिकूल भुगतान शेष को ठीक करने के उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : प्रतिकूल भुगतान शेष को ठीक करने के उपाए।

प्रतिकूल भुगतान शेष को ठीक करने के उपाय निम्नलिखित हैं।

(1) निर्यातों को प्रोत्साहन देना: निर्यात में वृद्धि द्वारा भुगतान शेष की स्थिति में सुधार सबसे उत्तम उपाय माना जाता है। प्रतिकूल भुगतान शेष के सुधार के लिए देश के निर्यातों को प्रोत्साहित करना चाहिए। निर्यात पर लगे सभी प्रतिबंध अथवा कर हटा देने चाहिए तथा निर्यात उद्योगों को विशेष सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। विदेशों में देशी वस्तुओं की मांग बढ़ाने के प्रचार तथा विज्ञापनों का सहारा लेना चाहिए और विदेशों में देशी वस्तुओं की प्रदर्शनियां लगानी चाहिए। इस प्रकार निर्यात उद्योग का उत्पादन तथा निर्यात क्षमता बढ़ेगी और भुगतान शेष की स्थिति में सुधार होगा।

(2) मुद्रा विस्फीति: विस्फीति का अर्थ उस मौद्रिक नीति से है जिसके अंतर्गत चलन मुद्रा की मात्रा को कम किया जाता है ताकि कीमतें और लोगों की मुद्रा आय कम हो जाए। केन्द्रिय बैंक, बैंक दरों में वृद्धि, खुले बाजार की क्रियाओं व अन्य उपायों द्वारा अर्थव्यवस्था में साख की मात्रा कम कर देता है। इससे कीमतों में कमी आ जाती है और लोगों की मौद्रिक आय कम हो जाती है। कीमतों में कमी के कारण निर्यातों में वृद्धि होती है और लोगों की मौद्रिक आय कम होने के कारण आयात कम हो जाते हैं जिससे प्रतिकूल भुगतान शेष में सुधार हो जाता है।

(3) अवमूल्यन: अवमूल्यन से अभिप्राय ऐसी नीति से है जिसके अंतर्गत एक देश की सरकार अपनी मुद्रा के मूल्य को विदेशी मुद्राओं के मुकाबले में घटा देती है। इसके फलस्वरूप आयात महंगे हो जाते हैं और निर्यात सस्ते। फलस्वरूप देश के प्रतिकूल भुगतान शेष की स्थिति में सुधार होता है।

(4) विदेशी निवेश को प्रोत्साहन : प्रतिकूल भुगतान शेष के सुधार का एक और उपाय विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देना है। विदेशी पूंजी का निवेश देश के लिए एक प्रकार की लेनदारी बन जाता है जिससे भुगतान शेष पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। विदेशी निवेश को अनेक प्रकार की सुविधाओं व प्रलोभनों द्वारा ही आकर्षित किया जा सकता है।

(5) राज्य व्यापार : अल्पविकसित देशों में समान्यतः भुगतान शेष प्रतिकूल रहता है। ऐसी स्थिति में राज्य

Downloaded from cclchapter.com

आयातों व निर्यातों को अपने हाथ में लेकर अनावश्यक आयातों पर रोक लगा सकता है और निर्यातों को प्रोत्साहन दे सकता है। परंतु इस तरीके को वही देश अपना सकता है जो विदेशी दबाव में ना रहे।

Q.22 वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? इसकी मुख्य कठिनाईयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर वस्तु विनिमय प्रणाली उस प्रणाली को कहते हैं जिसमे वस्तु का विनिमय वस्तु से किया जाता है, अर्थात वस्तु के बदले वस्तु का ही लेन देन होता है।

आर.पी. कैंट के शब्दों में, वस्तु विनिमय मुद्रा का विनिमय माध्यम के रूप में प्रयोग किए बिना वस्तुओं का वस्तुओं के लिए प्रत्यक्ष विनिमय है।

वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयाँ: वस्तु विनिमय प्रणाली की मुख्य कठिनाइयाँ निम्नलिखित हैं:

(i) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग में कठिनाई : आवश्यकताओं का दोहरा संयोग वस्तु विनिमय प्रणाली की एक पूर्व शर्त है। आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से अभिप्राय यह है कि किसी एक व्यक्ति की वस्तु दूसरे की आवश्यकता को और दूसरे व्यक्ति की वस्तु पहले की आवश्यकता को पूरा करती है, किन्तु यह एक दुर्लभ घटना है। वास्तव में यह बहुत ही कठिन है कि आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसे आपके घोड़े की आवश्यकता हो और उसके पास देने के लिए गाय हो जिसकी आपको आवश्यकता है। अतः वस्तु विनिमय प्रणाली में विनिमय बहुत ही सीमित स्तर पर हुआ करता था।

(ii) मूल्य की समान इकाई का अभाव: वस्तु विनिमय प्रणाली में मूल्य की समान इकाई का अभाव पाया जाता है। इसके आभाव में किसी वस्तु का मूल्य व्यक्त करना बहुत कठिन होता है। उदाहरण के लिए यदि आपसे यह प्रश्न किया जाए कि आपकी कार का क्या मूल्य है? आपका उत्तर है ₹ 5 लाख। क्या आप यही उत्तर वस्तु विनिमय प्रणाली में दे सकते हैं? निश्चित तौर पर नहीं। ऐसी प्रणाली में आपकी कार का मूल्य घोड़ों, गायों के रूप में निर्धारित किया जाएगा, क्योंकि उस प्रणाली में मुद्रा नहीं पाई जाती।

(iii) भविष्य में किए जाने वाले स्थगित भुगतानों की प्रणाली का अभाव : भविष्य में किए जाने वाले या स्थगित भुगतानों से अभिप्राय उन भुगतानों से है, जिन्हें तत्काल न करके भविष्य में कुछ समय पश्चात किया जाता है। उदाहरण के लिए ब्याज, मज़दूरी, किराया आदि के भुगतान संबंधी जो करार किए जाते हैं उन्हें स्थगित भुगतान कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप किसी श्रमिक की सेवाएँ भाड़े पर लेते हैं और उसके साथ ₹ 5000 प्रति मास भुगतान करने का औपचारिक समझौता करते हैं तो वस्तु विनिमय प्रणाली में आप क्या करोगे? क्या आप मेज, कुर्सियाँ, चावल तथा गेहूँ आदि में भुगतान करेंगे? वस्तु विनिमय प्रणाली में ठेके के भुगतान या भावी भुगतान बहुत कठिन होंगे।

(iv) धन या मूल्य के संचय में कठिनाई : वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा के अभाव में धन या मूल्य का संचय वस्तुओं या पशुओं के रूप में ही किया जा सकता है। परन्तु इनके रूप में निम्नलिखित चार कारणों से धन का संचय करना संभव नहीं होता (1) कुछ वस्तुएं जैसे अनाज़, सब्जियाँ आदि तथा पशु नाशवान होते हैं। इनका अधिक समय तक संचय नहीं किया जा सकता। (2) कई वस्तुओं की किस्म

Downloaded from cclchapter.com

तथा गुण समय के साथ–साथ खराब होते जाते हैं। इस प्रकार उनका मूल्य कम हो जाता है। (3) वस्तुओं तथा पशुओं का संचय करने के लिए बहुत अधिक लंबे चौड़े स्थान की जरूरत होती है। (4) पशुओं को जीवित रखने के लिए उन पर धन खर्च करना पड़ता है। अतएव वस्तु विनिमय प्रणाली में धन का संचय करना संभव नहीं होता।

(v) मूल्य हस्तांतरण में कठिनाई : वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तुओं के मूल्य का हस्तांतरण करना बहुत कठिन है। मान लीजिए एक व्यक्ति अपना मकान बेच कर दूसरी जगह जाना चाहता है। उसे मकान के बेदले में वस्तुएँ तथा पशु ही प्राप्त होंगे। भारी वस्तुओं जैसे अनाज आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना काफी कठिन होगा। मार्ग में पशु बीमार हो सकते हैं तथा मर भी सकते हैं। इसलिए मूल्य हस्तांतरण करना संभव नहीं होगा।

अथवा

(i) ऐच्छिक बेरोजगारी : ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्राय उस स्थिति से है, जिसमें एक श्रमिक रोजगार उपलब्ध होने पर भी, मजूदरी की वर्तमान दर कम करने के लिए तैयार नहीं होता।

अनैच्छिक बेरोजगारी : अनैच्छिक बेरोजगारी वह स्थिति है, जिसमें लोगों को रोजगार के अवसर के अभाव में बेरोजगार रहना पड़ता है, यद्यपि वे मजदूरी की वर्तमान दर पर काम करने को तैयार होते हैं।

(ii) बैंक दर : बैंक दर ब्याज की वह न्यूनतम दर है जिस पर किसी देश का केन्द्रिय बैंक व्यापारिक बैंक को ऋण देने के लिए तैयार होता है। बैंक दर के बढ़ने से ब्याज की दर बढ़ती है तथा ऋण महंगा होता है। इसके फलस्वरूप साख की मांग कम हो जाती है। इसके विपरीत, बैंक दर कम करने पर ब्याज की दर कम होती है तथा ऋण सस्ता होता है तथा साख की मांग बढ़ जाती है।

Downloaded from cclchapter.com

Solved Model Question Paper
Economics +2
PART-A

Q (a) **Who is the father of Economics.**

Ans.1 Adam Smith.

(b) **Is it correct that** $AR = \frac{TR}{Q}$?

Ans. It is correct that $AR = \frac{TR}{Q}$

(c) **What is substitute goods?**

Ans. Those goods which can be used in place of each other to satisfy consumer's wants. Eg: Tea and Coffee.

(d) **Degrees of Price Elasticity of Demand-----**

Ans. Five

(e) **Who wrote the book 'Principles of Economics'?**

Ans. Dr. Marshall.

Q.2 Explain the assumptions of the law of demand.

Ans. The main assumptions of the law of demand are as follows:

(i) There is no change in the income of the consumer.

(ii) Taste and preferences of the consumers remain constant.

(iii) Prices of the related goods do not change.

Q.3 Write difference between Micro Economics and Macro Economics.

Ans. (1) Micro Economics deals with economic issues at the level of an individual whereas Macro Economics deals with the functioning of the economy as a whole.

(2) Micro Economics is concerned with determination of output and price for an individual firm or industry where as Macro Economics is concerned with determination of aggregate output and general price level in the economy as a whole.

Q.4 Explain the features of the perfect competition market.

Ans. Main features competition are as follows:

Downloaded from cclchapter.com

(1) The number of buyers and sellers is very large in this competition.

(2) All sellers sell identical units of a given product and price of the product throughout the market will be the same.

(3) In perfect competition there is no legal restriction on the entry or exit of a firm means a firm can enter and leave any industry at any time.

Q.5 Distinguish between returns to a factor and returns to scale.

Ans. Following are the main differences between returns to a factor and returns to scale :

(1) Returns to scale are studied on the assumption that factor-ratio remains constant whereas in case of returns to a factor-ratio ought to change.

(2) Returns to a factor apply when only one factor is variable and other factors remain fixed whereas returns to scale apply when all factors of production are variable.

(3) Returns to scale is only a long period possibility whereas returns to a factor are often studied with reference to short period.

Q.6 Complete the following table"

Ans.

Units of output	Average cost	Total cost	Marginal cost
1	10	10	-
2	9	18	8
3	8	24	6
4	7	28	4
5	7	35	7

Q.7 Calculate the elasticity of demand from the following table.

Ans.7 Given P=₹10 P_1=₹9, Q= 15Kg, Q_1 = 20 Kg

Δ P=P_1-P = 4-5= ₹ -1

Δ Q= Q_1-Q = 20-15 = 5Kg

$$Ed = -\frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$$

$$= -\frac{10}{15} \times \frac{5}{-1} = 3.33$$

$Ed = 3.33$ $\quad$ $Ed = > 1$

Q.8 Explain the factor affecting supply.

Ans. Following factors affecting the supply of a commodity : ------

Downloaded from cclchapter.com

(1) Price of a commodity : There is a positive relation between price of a commodity and its quantity supplied means higher the price higher the quantity supplied and lower the price lower the quantity supplied.

(2) Number of Firms : Increase in the number of firms implies increase in market supply and decrease in the number of firms implies decrease in market supply.

(3) Change in Technology : Improvement in the technique of production reduces cost of production. It means more of the commodity is supplied at its existing price.

(4) Goal of the Firm : If the goal of the firm is to maximise profit more quantity of the commodity will be supplied only at a higher price whereas if the goal of the firm is to maximise sales more will be supplied even at the same price.

Q.9 Explain extension of demand and contraction of demand with the help of diagram.

Ans. Extension of Demand : Other things being equal, when with a fall in own price of the commodity, demand of a commodity rises, it is called extension of demand.

Price	Quantity Demanded
5	1
1	5

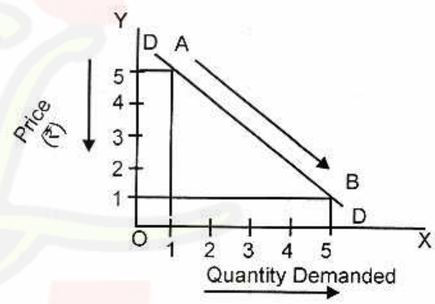

Contraction of Demand : Other things remaining the same, when with a rise in own price of the commodity quantity demanded of a commodity decreases, it is called contraction of demand.

Price	Quantity Demanded
1	5
5	1

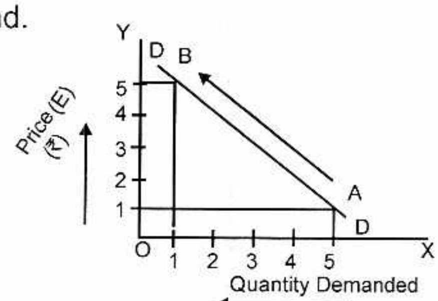

Q.10 What is meant by law of increasing returns to a factors? What are the causes of its implementation?

Ans. Increasing returns to a factor refers to the situation in which total output

Downloaded from cclchapter.com

tends to increase at the increasing rate when more of the variable factor is combined with the fixed factor of production. Increasing returns to a factor occurs because of the following factors :

(1) **Fuller utilisation of the fixed factor :** In the initial stages fixed factor remains under utilised . It is fuller utilisation calls for greater application of the variable factor.

(2) **Better coordination between the factors :** So long as fixed factor remains under-utilised, additional application of the variable factor tends to improve the degree of coordination between the fixed and variable factors, resulted total output increases at the increasing rate.

(3) Increased Efficiency of the variable factor : Additional application of the variable factor facilitates process based division of labour that raises the efficiency of the factor, accordingly marginal productivity of the factor tends to rise.

Q.11 What will be the impact on equilibrium price when demand changes, but supply remains constant.

Ans. If the supply of the commodity remains constant, then the price increase with increase in demand and price decrease with decrease in demand. It can be shown with the help of a diagram.....

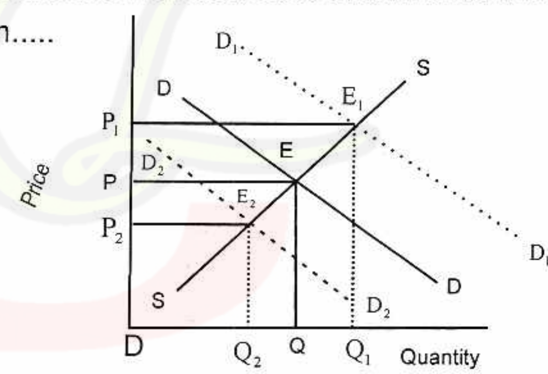

This diagram shows that when supply curve remains constant, equilibrium price increases with increase in demand of the commodity and equilibrium quantity also increases. On the other hand when demand decreases equilibrium price will decrease and equilibrium quantity will also decrease.

OR

(a) How does an economic problem arise?

Economic problem is regarded as a problem of choice because resources have alternative uses. Thus, the problem of choice arises because the wants are unlimited and the means to satisfy them are scarce or limited. Problem of choice is the main economic problem.

Downloaded from cclchapter.com

(b) What is meant by utility? Name the various concept of utility.

Want satisfying capacity of a commodity is known as utility. In other words utility is the ability of a good to satisfy a want. Utility has two concepts....

(1) **Total utility :** sum total of marginal utilities of all the units is called total utility.

(2) **Marginal utility :** marginal utility is the utility derived from an additional unit of a commodity.

PART-B

Q.12 Problem of unemployment is realted to---------.

Ans.
(a) Macro Economics
(b) Reserve Bank of India
(c) Income Tax
(d) J.M. Keynes

Q.13 Distinguish between Stock and Flow?

Ans. A stock is a quantity, measured at a particular point of time. Eg: wealth and capital. Whereas a flow is a quantity, measured per unit of time period. Eg: income and investment.

Q.14 If MPS = 0.8, find the value of multiplier.

Ans. Given MPS = 0.8

$$K = \frac{1}{MPS}$$

$$K = \frac{1}{0.8} = 1.25$$

Q.15 Differentiate between intermediate goods and final goods.

Ans.

	Final Goods	Intermediate Goods
1	These goods are outside the boundary line of production	These goods are within the boundary line of production
2	These goods are ready to reach their final users for consumption.	These goods are used as raw material by the producers.
3	These goods are included in the estimation of national income.	These goods are not included in the estimation of national income.

Downloaded from cclchapter.com

Q.16 Calculate the Net National income from the following data.

Ans. Net National Income = Gross domestic income–Depreciation+ Net factor income from abroad.

Net National Income = ₹ 45000 Cr. – ₹ 3000 Cr. + ₹ 2000 Cr. = ₹ 44,000 Cr.

Q.17 Explain the concept of Deficit budget.

Ans. Deficit budget is that budget in which government receipts are less than the government expenditure or government expenditure is greater than government receipts. Keynes recommends deficit budget as a key instrument to remedy depression. Deficit budget raises the level of Aggregate Demand in two ways.

(i) Directly by increasing the government expenditure.

(ii) Indirectly by inducing greater expenditure by the people.

Q.18 Explain the double counting problem. How it can be avoided?

Ans. The problem of double counting is the problem of estimating the value of goods and services more than once. This is because while estimating national income by using final output method, the value of only final goods and services is taken into consideration. The counting of the value of commodity more than once is called double counting. This leads to over estimation of the value of goods and services produced.

To avoid double counting two methods are used :

(1) Final Output Method : According to this method the value of final goods and services only is included in national income.

(2) Value Added Method : This method refers to the difference between value of output and the value of intermediate consumption of each producing unit in the country.

Q.19 Explain the main function of money.

Ans. Following are the main functions of money :

(1) **Medium of Exchange :** Medium of exchange is an important function of money. It means that money acts as an intermediary that can be used in exchange for goods and services in an exchange transaction. As medium of exchange money has removed the main difficulty of batter system. The medium of exchange function of money implies that money is generally acceptable by all the people.

(2) **Unit of Value :** Unit of value is the other main function of money. Money serves as a measure of value in terms of unit of account. Unit of account

Downloaded from cclchapter.com

means that the value of each good or service is measured in the monetary unit. Measurement of value was the main difficulty of batter system, so we can say that money has removed this difficulty.

Q.20 What is difference between Central Bank and Commercial bank.

Ans. Central bank of a country differs from the commercial banks in following respects:

(1) Public welfare is the main motive of the central bank while commercial banks operate to earn profit.

(2) Central bank has no direct dealing with the people as against the commercial banks who deal directly with the people.

(3) Central bank has the monopoly of note-issue but commercial banks can't issue notes.

(4) Central bank controls the banking system of the country. Commercial banks function under the control of the Central bank.

(5) Central bank is the banker of the government. All banking activities of the government are done by it. Commercial banks may function as representatives of the central bank for government works.

(6) Central bank is a state owned institution where commercial banks may be private or state owned.

Q.21 Explain the measures to correct the disequilibrium in the balance of payments.

Ans. Following are the measures to correct disequilibrium in the balance of payment:

(1) **Discouraging Imports :** In order to correct disequilibrium in balance of payments, imports should be reduced by imposing Import Duties, Import Quotas and Encouraging Import Substitution.

(2) **Export Promotion :** The best method to correct disequilibrium in the balance of payments is to increase the volume of exports. All duties or restrictions on exports should be withdrawn and export industries be given special concessions and facilities.

(3) **Encouragement to Foreign Investment :** Investment of foreign capital in the country constitutes a credit item and so has a favourable effect on the balance of payments position. Foreign investment can be attracted by offering different kinds of incentives and concessions.

(4) **Devaluation :** Devaluation is that monetary measure under which

Downloaded from cclchapter.com

government of a country lowers the value of its currency in terms of foreign currencies. As a result of it, imports become dearer and exports become cheaper. Thus, disequilibrium in balance of payment can be corrected.

Q.22 What is barter system of exchange. Explain its drawbacks.

Ans. Barter system of exchange is the system in which commodities are exchanged for commodities. This is also called commodity for commodity exchange economy or 'C-C' economy. But following are the principal drawback of the barter system of exchange:

(1) **Difficulty of Double Coincidence of wants:** Double coincidence of wants is a prior requirement of the barter system of exchange. But it is a rare occurrence.

(2) **Lack of Common Unit of Value :** Barter system lacks common unit of value. In its absence, it is very difficult to express the value of a thing.

(3) **Difficulty of Store of Wealth :** Under barter system wealth will be stored in the forms of goods or animals. But these goods can't be stored for a long time because they are perishable and require large space too.

(4) **Difficulty of Transfer of Value :** In barter system, transfer of value of goods from one place to the other is very difficult. Therefore it won't be possible to transfer value.

Or

(I) Differentiate between Voluntary and involuntary unemployment.

Voluntary Unemployment refers to the situation when a person is unemployed because he is not willing to work at the existing wage rate, even when work is available. Whereas involuntary unemployment is a compulsion to remain unemployed because jobs are not available in the market, although persons are willing to work at the prevailing rate of wages.

(II) Write a note on bank rate.

Bank rate is the minimum rate at which the central bank of a country is prepared to give credit to the commercial banks. The increase in bank rate increases the rate of interest and credit becomes dear. On the other hand decrease in the bank rate lowers the rate of interest and credit becomes cheap. The central bank adopts the dear money policy during inflation and cheap money policy during deflation.

Downloaded from cclchapter.com